हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-III (प्रश्नपत्र-3)

DTVF/18(JS)-HL-**HL3**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Devendra Prakash

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 03/07/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Dmeena

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमजोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेजों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में आर्य समाज का योगदान

19 वीं सदी में ईसाई मिशनरियों द्वारा ईसाई धर्म के प्रचार की प्रतिक्रिया में भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन को बल मिला। इसी प्रक्रिया में आर्य समाज ने हिन्दी भाषा के महत्व को समझा तथा इसके विकास में योगदान दिया।

वस्तुतः केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा से स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी में उपदेश देना प्रारंभ किया ताकि अधिकतम जनता तक उनका प्रसार हो सके, जिससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिले। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की रचना भी हिन्दी में की।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने 'हिन्दी पढ़ना' को आर्य समाज के नियमों में सम्मिलित किया। उन्होंने 'भारत भारतीयों के लिए' नारा देते हुये कहा कि "हिन्दी का प्रचार-प्रसार ही हमें स्वदेशी के करीब ला सकता है।"

हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए आर्य समाज ने देश के विभिन्न भागों में अपनी शाखायें खोली।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

वे हिन्दी को 'आर्यभाषा' से संबोधित करते थे तथा उसे ही राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करते थे।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को स्थापित करने की जो प्रक्रिया 17वीं सदी में प्रारंभ हुई थी, उसके मजबूत स्तंभ के रूप में आर्य समाज ने योगदान दिया।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का योगदान

स्वतंत्रता आन्दोलन के गरमदल के नेता बाल गंगाधर तिलक हिन्दी के विकास के साथ देवनागरी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बालगंगाधर तिलक के 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' के मूल में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करना था। उनका स्पष्टत: मानना था कि हिन्दी ही एकमात्र भाषा है, जो राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरो सकती है।

मराठी मातृभाषा होने के बावजूद उन्होंने सावरकर की भाँति हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए 'हिन्दी केसरी' नामक समाचार पत्र का सम्पादन किया ताकि लोगों तक हिन्दी की पहुँच बढ़े।

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान शिवाजी महोत्सव तथा गणेश महोत्सव के दौरान वे लोगों से हिन्दी के प्रचार-प्रसार का आह्वान करते थे। गांधी से विभिन्न मुद्दों पर मतभेद के बावजूद वे गांधी के विचार - "हिन्दी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है" के समर्थक थे।

हिन्दी के विकास के लिए उन्होंने देवनागरी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लिपि में टंकण के लिए प्रयास किया और अथक प्रयास से 'तिलक फांट' का विकास किया।

राष्ट्रीयता के प्रचार तथा स्वदेशी की चाहत उनके हिन्दी प्रेम का महत्वपूर्ण पक्ष है। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने में तिलक ने एक अविस्मरणीय भूमिका का निर्वहन किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) देवनागरी लिपि पर गैर हिन्दी भाषाओं और अन्य लिपियों का प्रभाव

किसी भी देश जहाँ एक से अधिक भाषायें तथा लिपियाँ उपस्थित हो, वहाँ किसी एक लिपि के अखिल राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकरण के लिए आवश्यक है कि वह अन्य लिपियों की ध्वनियों को ग्रहण करने के लिए पर्याप्त लचीली हो।

अपने विकास की प्रक्रिया में हिन्दी ने कई गैर हिन्दी भाषाओं के शब्दों तथा ध्वनियों को स्वयं में समाहित किया। अतः स्वाभाविक है कि देवनागरी लिपि पर अन्य लिपियों का प्रभाव है। ये प्रभाव निम्न प्रकार देखे जा सकते है-

- फारसी भाषा की ध्वनियों को देवनागरी में सम्मिलित किया गया है। उदा-

  क़, ज़, फ़ आदि

- अंग्रेजी के कई शब्दो जैसे- डॉक्टर के उच्चारण के लिए देवनागरी में 'ऑ' को स्वीकार किया गया है।

- दक्षिण भारतीय भाषाओं की ध्वनियों को भी देवनागरी में स्वीकरण मिला है।

  उदाहरण - ळ ऩ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार स्पष्ट है कि देवनागरी अन्य भारतीय भाषाओं तथा लिपियों की ध्वनियां का निरन्तर समावेश कर रही है, जो इसके मानकीकरण तथा अखिल भारतीय लिपि बनने की आवश्यक शर्त भी है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण के क्षेत्र में योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भाषा के मानकीकरण की प्रक्रिया में उसके व्याकरण का विकास आवश्यक है। व्याकरण के विकास से संज्ञा, सर्वनाम जैसे पदों की वाक्य में निश्चित स्थान की व्यवस्था हो पाती है साथ ही गैर भाषाभाषी के लिए उस भाषा को सीखना भी आसान हो जाता है।

हिन्दी की मानकीकरण की प्रक्रिया में केलॉग का हिन्दी व्याकरण आरंभिक प्रयासों में सम्मिलित है। इसकी विशेषताएँ एवं योगदान निम्न प्रकार है -

- इस व्याकरण का मूल आधार हिन्दी तथा उर्दू में समानता है, जिसके कारण यह अपेक्षाकृत अधिक लोकप्रिय है।
- हिन्दी भाषा के जानकार के लिए आवश्यक है कि वह इसकी दो प्रसिद्ध बोलियों 'अवधी' तथा 'ब्रजभाषा' की भी जानकारी से युक्त हो। केलॉग व्याकरण में इसका ध्यान रखा गया है।
- 'अवधी' तथा 'ब्रज' के अतिरिक्त अन्य बोलियों की भी पर्याप्त जानकारी दी गई है।
- इसमें प्रयुक्त उदाहरण मुख्य रूप से लोक प्रचलित उदाहरण ही है, जहाँ कहीं भी किसी पुस्तक का प्रयोग किया है, उसका प्रमाण दिया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नागरी के अतिरिक्त अन्य लिपियों जैसे- कैथी। आदि की भी जानकारी दी गई है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि केलॉग का हिन्दी व्याकरण हिन्दी के मानकीकरण के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) उन्नीसवीं सदी का खड़ी बोली आन्दोलन और अयोध्या प्रसाद खत्री

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

19 वीं सदी में खड़ी बोली हिन्दी के विकास में खत्री का योगदान महत्वपूर्ण है। भारतेन्दु युग में भाषायी द्वैत की स्थिति में खत्री ने अपनी लेखनी से ही खड़ी बोली के विकास मे भूमिका निभाई।

अयोध्या प्रसाद खत्री का हिन्दी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होने निबंध, उपन्यास आदि के माध्यम से खड़ी बोली को गद्य भाषा के रूप मे स्थापित किया।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) स्वतंत्रता के बाद हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु किये गए सरकारी प्रयासों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा द्वारा हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया तथा अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के प्रसार संबंधी दिशा निर्देश संविधान में दिये गये।

स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए किये गये सरकारी प्रयासों में 1955 में संविधान के अनुच्छेद 344 का पालन करते हुये राष्ट्रपति द्वारा राजभाषा आयोग की स्थापना सबसे महत्वपूर्ण है।

राजभाषा आयोग द्वारा हिन्दी के ~~प्रचार~~-प्रसार के लिए एक रिपोर्ट बनाई गई। जिसमें दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रसार, प्रशासन में हिन्दी के प्रयोग आदि से संबंधित सुझाव थे। इन सुझावों को राजभाषा समिति को सौंप दिया गया।

इसके पश्चात् हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए किये गये प्रयासों में 1968 का संसद द्वारा स्वीकृत संकल्प पत्र है। इसके तहत सरकारी निर्देशों को ~~हिन्दी~~ अंग्रेजी के साथ ~~अंग्रेजी~~ हिन्दी में भी जारी करने तथा उच्च न्यायालयों में क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग संबंधी प्रावधान था। इसके परिणामस्वरूप राजस्थान, उत्तरप्रदेश

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जैसे राज्यों में वर्तमान में उच्च न्यायालयों की कार्यवाही हिन्दी में हो रही है।

हिन्दी के प्रचार प्रसार के अन्य प्रयासों में 1976 में राजभाषा नियम प्रमुख है। इसके तहत गृह मंत्रालय के अन्तर्गत राजभाषा विभाग की स्थापना की गई।

राजभाषा विभाग द्वारा केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापना की गई। जो कर्मचारियों के प्रशिक्षण तथा शब्दावली के अनुवाद के लिए कार्यरत है।

शिक्षा मंत्रालय के अधीन तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दावली आयोग तथा विधि मंत्रालय के अधीन 'विधायी आयोग' की स्थापना हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली के विकास के लिए प्रयत्नशील है।

हाल में किये गये प्रयासों में केन्द्र सरकार द्वारा राजभाषा समिति की सिफारिशों को स्वीकार करना है। जो निम्नलिखित है -

- राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री जैसे उच्च संवैधानिक पदों पर आसीन व्यक्तियों को यथासंभव हिन्दी में भाषण

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

देना चाहिए।

हवाईजहाजो में प्रयुक्त पाठ्य सामग्री में 50% हिन्दी में होनी चाहिए।

भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियो के प्रशिक्षण केन्द्र पर पाठ्य सामग्री हिन्दी मे भी उपलब्ध कराई जाये।

इस प्रकार स्पष्ट है कि सरकार ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए कई कदम उठाये है किन्तु ये मात्रात्मक अधिक है गुणात्मक कम।

अतः सरकार को चाहिए कि राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के गंभीर कदम उठाये क्योंकि लोकतंत्र में जनता की इच्छा को ध्यान में रखा जाता है तथा 70-72% जनता हिन्दी भाषी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'हिन्दी भाषा का मानकीकरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी' विषय पर नातिदीर्घ निबंध लिखिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भी भाषा के मानकीकरण के लिए उसकी व्याकरण, औपचारिक शब्दावली का होना आवश्यक है। हिन्दी के मानकीकरण के आरंभिक प्रयासों में महावीर प्रसाद द्विवेदी का महत्वपूर्ण योगदान है।

भारतेन्दु युग में भाषायी द्वैत के बावजूद खड़ी बोली गद्य की भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी थी किन्तु उसमें कई शब्दों का प्रयोग अमानक था। जैसे - ~~इसका~~ इस्का, उन्के आदि।

आचार्य महावीर प्रसाद ने 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादक बनने के उपरांत हिन्दी के मानकीकरण के गंभीर प्रयास किया। उन्होंने भाषायी अनुशासन को अपनाते हुये व्याकरणिक त्रुटियों को दूर करते हुये खड़ी बोली को हिन्दी के मानक रूप में स्थापित किया।

आचार्य द्विवेदी द्वारा किये गये प्रयास निम्न है -

- विदेशी शब्द जो उसी रूप में हिन्दी में स्वीकार कर लिये है, उन्हे बने रहने दिया जाये। जैसे - वायु, आत्मा आदि।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

संज्ञा में परसर्ग का प्रयोग अलग तथा सर्वनाम के साथ किया जाये। उदाहरण -

(अ) राम ने खाना खाया।

(ब) उनको जाने दो।

- कुछ शब्दों के बहुवचन हिन्दी में अमानक रूप में प्रयुक्त होते हैं अतः उन्हे मानक रूप में प्रयुक्त किया जाये। जैसे -

राजा → राजे * (अमानक)

एकराजा, दो राजा (मानक)

- कुछ विदेशज शब्द जो मूलतः पुल्लिंग है वे हिन्दी में स्त्रीलिंग के रूप में प्रयुक्त होते है। अतः उन्हे बने रहने दिया जाये। जैसे -

वायु, आत्मा, पाठशाला आदि।

- जिन शब्दों के अमानक रूप हिन्दी में प्रचलित है उनका मानक रूप प्रयुक्त किया जाये। जैसे

(अ) इसनें > इसनें

(ब) उसका > उसका

कृपया इस स्थान पे कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कुछ ब्रजभाषा के शब्द हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं. अतः उनका प्रयोग बंद किया जाये। जैसे - वाने, उनै आदि

इस प्रकार स्पष्ट है कि महावीर प्रसाद ने भाषायी अनुशासन लागू कर खड़ी बोली को मानक रूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) उन्नीसवीं शताब्दी में खड़ी बोली गद्य के विकास में 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उन्नीसवीं सदी वह संक्रमण का समय है जब ब्रजभाषा अपने अस्तित्व के लिए लड़ रही थी तथा खड़ी बोली अपने बोली का चोला त्यागकर भाषा बनने की ओर अग्रसर थी। इसी समय फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना ने इसे मजबूत आधार प्रदान किया।

वस्तुतः ब्रिटिश सिविल सेवकों को हिन्दी का आरंभिक ज्ञान प्रदान के लिए फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की गई। इसके प्राचार्य गिलक्रिस्ट तथा चार शिक्षकों इंशा अल्ला खाँ, लल्लू लाल, सदल मिश्र तथा सदासुखलाल ने ~~हिन्दी~~ खड़ी बोली के प्रयोग को प्रोत्साहित किया।

इंशा अल्ला खाँ ने 'उदयभान चरित' या 'रानी केतकी की कहानी' में खड़ी बोली का प्रयोग किया। उन्होंने लिखा कि - "हिन्दी छुट किसी अन्य बोली का पुट न मिले।" उनकी हिन्दी में ~~अरबी~~ उर्दू के तत्वों की अधिकता के कारण वह हिन्दुस्तानी के करीब दिखाई पड़ती है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(b) लल्लू लाल ने "यामिनी छोड़ दिल्ली आगरे की ~~बोली~~ बोली का प्रयोग किया। उन्होंने खड़ी बोली से संबंधित अनेक प्रयोग किये तथा अपनी रचनाओं में इसी खड़ी बोली का प्रयोग किया।

सदासुखलाल खड़ी बोली के प्रबल समर्थक थे। उनकी भाषा में खड़ी बोली का लगभग मानक रूप उपस्थित है। खड़ी बोली को उन्होंने ब्रजभाषा के प्रभाव से बचाते हुये उसको गद्य भाषा के रूप में स्थापित किया।

सदल मिश्र भी फोर्ट विलियम कॉलेज के अध्यापक थे। उन्होंने भाषायी शुद्धता पर बल देते हुये उस बोली का प्रयोग किया जिसका प्रयोग तत्कालीन सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन में बढ़ रहा था।

इस प्रकार स्पष्ट है कि फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना खड़ी बोली के विकास में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ क्योंकि खड़ी बोली का गद्य रूप में विकास होने के कारण ही भारतेन्दु युग में परिस्कृत खड़ी बोली का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विकास हुआ। जिसे भारतेन्दु ने 'हिन्दी नये चाल में ढली, 1873 में।' के रूप में प्रयुक्त किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) 'परख' की 'कट्टो'

'परख' जैनेन्द्र का एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास है, जिसमें उनकी मनोविश्लेषणवादी विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है।

जैनेन्द्र के उपन्यासों की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि उनके नारी पात्र पुरुष पात्रों की अपेक्षा अधिक सचेष्ट तथा सहृदय होते है। परख की कट्टो के संदर्भ में इसे समझा भी जा सकता है।

वस्तुतः 'परख' में कट्टो ~~पहले सत्यधन~~ एक विधवा महिला है, जो पहले सत्यधन से प्रेम करती है किन्तु सत्यधन बुद्धि से प्रेरित होकर गरिमा से विवाह कर लेता है। परिणामस्वरूप कट्टो का विवाह बिहारी से होता है।

बिहारी से विवाह के बाद कट्टो उससे एकनिष्ठ प्रेम करती है किन्तु जैनेन्द्र के नारी पात्रों की एक विशेषता यह भी है कि वे समाज तथा परिस्थितियों से कम तथा अपने आप से ज्यादा संघर्ष करते है। 'कट्टो' के किरदार में यह भी दिखाई देता है।

वह बुद्धि से प्रेरित होकर भले ही बिहारी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से शादी कर लेती है किन्तु हृदय से प्रेरित होकर वह बार-बार सत्यधन का ख्याल करती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'परख' की कट्टो 'त्यागपत्र' की मृणाल की भाँति आत्मसंघर्ष से युक्त किरदार है तथा मृणाल की भाँति ही विद्रोह की भावना के साथ ~~सहन करने~~ समझौतावादी प्रवृत्ति से युक्त है।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) हिन्दी का प्रगतिवादी उपन्यास

'प्रगतिवाद' मार्क्सवाद का साहित्यिक संस्करण है। इन लेखकों का ~~एकमात्र~~ उद्देश्य 'समाज ही साहित्य का एकमात्र लक्ष्य है' को पुष्ट करना होता है।

प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास में प्रगतिवादी लेखकों में यशपाल, रांगेय राघव तथा नागार्जुन प्रमुख है। इन लेखकों ने समाज के वंचक वर्ग, शोषित मजदूर तथा नारी आदि को अपनी लेखनी का हिस्सा बनाया।

इनका मानना है कि साहित्य के माध्यम से लेखक वंचित-वर्ग को उसके अधिकारों का बोध कराये तथा क्रांति चेतना पैदा करे जिससे समाज में समानता की स्थापना हो सके।

यशपाल इस विचारधारा के अग्रणी लेखक है। उन्होंने 'दिव्या', पार्टी कॉमरेड, दादा कॉमरेड तथा 'झूठा सच' आदि उपन्यासों में प्रगतिवादी विचारधारा का प्रक्षेपण किया है। 'झूठा-सच' उपन्यास में वे देश विभाजन के कारणों तक पहुँचते हुये उसके आर्थिक पहलू की खोज करते है।

नागार्जुन प्रगतिवादी विचारधारा के एक विशिष्ट कवि है। उनकी यह विशेषता उनकी कविताओं, कहानी तथा उपन्यासों में दिखाई देती है। के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वे परघटित यथार्थ को भी बड़ी सूक्ष्मता से प्रकट करते हैं, जिससे यह आत्मघटित प्रतीत होता है।

रांगेय राघव प्रगतिवादी विचारधारा के अन्य कवि हैं। उन्होंने मुख्यतः मजदूर वर्ग का पूँजीपतियों द्वारा हो रहे शोषण को उजागर किया है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि प्रगतिवादी उपन्यास प्रेमचन्दोत्तर सामाजिक यथार्थ को प्रकट करने के साथ सहज शिल्प के कारण साहित्य को समाज से जोड़ता भी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) पद्माकर का शृंगार-वर्णन

किसी कवि के काव्य पर तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव होता है। रीतिकाल शृंगार की केन्द्रीयता का युग है। अतः स्वाभाविक है कि पद्माकर के काव्य पर भी शृंगार का प्रभाव है।

रीतिकाल के अन्य कवियों की भाँति पद्माकर का संबंध दरबार से रहा है। अतः उनकी कविताओं में देहमूलक शृंगार जो कि दरबारी लेखन का अभिन्न अंग है वह पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है। उनकी कविताओं में युवक-युवतियाँ होली के रंग में शृंगार क्रियाओं में रत दिखाई पड़ते है।

शृंगार की उनकी सूक्ष्म जानकारी का अंदाजा उनकी इस कविता से लगाया जा सकता है, जहाँ उन्होंने शृंगार के सभी तत्वों को एक साथ सम्मिलित कर दिया है-

"गुलगुली गिल में गलीचा है, गुनीजन हैं,
चाँदनी है, चिक है, चिरागन की माला है,
कहै पद्माकर ज्यों, गजक गिजा है सजी
सेज है, सुराही है, सुरा है और प्याला है।"

शृंगार के संयोगात्मक पक्ष के अतिरिक्त उन्होंने शृंगार के वियोगात्मक पक्ष को भी अपनी कविताओं

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में सम्मिलित किया है किन्तु तत्कालीन परिस्थितियों में विरह मूलक शृंगार उतना प्रभावी नहीं हो पाया है। द्रष्टव्य है -

"विरह बनाओ तो पावस ऋतु न बनाओ।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि रीतिकालीन मानसिकता के अनुरूप पद्माकर का शृंगार वर्णन अपने काल के अनुरूप श्रेष्ठ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) घनानंद की काव्य-भाषा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

घनानंद रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि है अर्थात, दरबार में रहने के बावजूद वो दरबार की झूठी अनुभूतियों के स्थान पर वास्तविक अनुभूतियों को अपने लेखन में सम्मिलित करते थे।

उनकी काव्य-भाषा तत्कालीन ब्रजभाषा है किन्तु उसमें रीतिकालीन देहमूलक श्रृंगार के स्थान पर भावनात्मक श्रृंगार की उपस्थिति है-

"अति सूधो है सनेह को मारग।
जहँ नेकू सयानप बाँक नहीं।"

वे तत्कालीन दरबारी लेखन से क्षुब्ध भी नजर आते हैं तथा कविता कर्म को दरबारी अभिव्यक्ति के स्थान पर स्वयं की वास्तविक अभिव्यक्ति से जोड़ते है। उदाहरण -

"लोगन लागि है कवित बनावत, मोहे तो मोरे कवित्त बनावत।"

उनकी इसी वास्तविक अनुभूतियों तथा भावनाओं के कारण ही उन्हे 'प्रेम के पीर' का कवि कहा जाता है। उनकी भाषा के संबंध में शुक्लजी ने कहा है कि-

"भाषा पर उनका जबरदस्त अधिकार था। वे अपनी कविताओं को अपने हिसाब से कहने की कला जानते थे।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सारांशतः कह सकते हैं कि रीतिकालीन देहमूलक शृंगार को भावनात्मक शृंगार से जोड़ने में घनानंद की भूमिका महत्वपूर्ण है। उन्होंने सुजान से अपने प्रेम को कृष्ण-राधा के प्रतीक के रूप में व्यक्त किया है -

"ऐसी रूप अगाधे राधे, राधे राधे राधे राधे।
तेरी मिलिबेको बृजमोहन, बहुत जतन हैं साधे।"

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति-चेतना के संदर्भ में विनयपत्रिका का अवगाहन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति काव्यधारा के शिखर है। उन्होंने अपनी भक्ति भावना के साथ लेखनी के बल पर अवधी को संस्कृत की मिठास से युक्त किया।

'विनयपत्रिका' तुलसीदास की पुस्तक है, जिसमें उन्होंने नवधा भक्ति को स्वीकार किया है। नवधा भक्ति के 'दास्य' रूप को उन्होंने सबसे अधिक वरीयता दी है।

सूरदास वल्लभाचार्य से मिलने पूर्व जिस दास्य भक्ति से युक्त थे, वही दास्य भक्ति विनयपत्रिका में तुलसी की भी दिखाई देती है। सूर जिस प्रकार कहते हैं 'मेरी कौन गति बजनाथ' तथा 'करि गोपाल की सब होई' उसी प्रकार तुलसीदास भी कहते हैं -

"राम सों बड़ो है कौन, मो सों कौन छोटो।
राम सों खरो है कौन, मो सों कौन खोटो।"

तुलसी की भक्ति चेतना का एक महत्वपूर्ण पक्ष उनकी समन्वय चेतना में दिखाई देता है। जब वे सगुण-निर्गुण, रामभक्त-शिवभक्त, ज्ञान-योग सभी को समन्वित करते हुये दिखाई

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

देते है। उनकी यही समन्वय चेतना तत्कालीन सामाजिक संस्कृति को प्रतिबिम्बित करती है। तुलसी कहते है -

- "अगुनहि - सगुनहि नहिं कछु भेदा।"
- शिवद्रोही मम दास कहावा, सो नर मोहि सपनेहुं नहीं भावा।"

तुलसी की भक्ति चेतना का एक स्वरूप जो उन्हे सूर से विशिष्ट बनाता है, वह है राम की औदात्यमूलक छवि। सूर ने जहाँ कृष्ण को चंचल बताया है, वही तुलसी के राम गांभीर्य भाव से युक्त उदात्त पुरुष है। राजा होने के बाद भी ~~एकपत्नीव्रत~~ एक पत्नीव्रत होना उनके राम की मूल विशेषता है।

तुलसी की भक्ति चेतना का एक पक्ष उनके 'रामराज्य' की अवधारणा में भी प्रतिबिम्बित होता है। तुलसी के अनुसार रामराज्य धरती पर स्वर्ग के समान है -

" दैहिक, दैविक, भौतिक तापा, राम राज्य काहुंह नहीं व्यापा।"

विनयपत्रिका में तुलसी की भक्ति चेतना अधिकांशत सकारात्मक रही है। 'शंबुक वध' तथा

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'सीता का परित्याग' आदि प्रसंगों को छोड़ देना उनकी प्रगतिशीलता को दर्शाता है किन्तु कुछ स्थानों पर नारी तथा शूद्र के संबंध में कहे उनके विचार उन्हें कठघरे में खड़ा करते हैं। वे लिखते हैं-

"ढोल गँवार, शूद्र, पशु, नारी,
सकल ताड़ना के अधिकारी।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि विनयपत्रिका में तुलसी ने दास्य भक्ति को अपनाया है, जिसमें राम की ~~र~~ महिमा का मंडन किया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की 'नया उपन्यास' धारा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वतंत्रता के पश्चात, मोहभंग, गहरी जटिलताओं, स्त्री-पुरुष संबंधों में बदलाव तथा पारिवारिक विखण्डन जैसी समस्याओं ने उपन्यास लेखन को नवीन विषयवस्तु प्रदान की।

वस्तुतः 'नया उपन्यास' को नामकरण नहीं बल्कि नवलेखन दौर में लिखे गये उपन्यासों के लिए प्रयुक्त किया। इस दौर में मुख्यतः तीन प्रवृत्तियों से युक्त उपन्यास लिखे गये।

① आधुनिक भावबोध: इस विचारधारा के प्रमुख उपन्यासकार मोहन राकेश हैं, उन्होंने अस्तित्ववादी विचारधारा पर आधारित उपन्यासों का लेखन किया। उनके नाटकों में - 'आषाढ़ का एक दिन', आधे-अधूरे, तथा लहरों के राजहंस में उनके नायक जिस प्रकार व्यक्तित्व विखण्डन, आत्मनिर्वासन तथा विसंगतियों से युक्त हैं उसी तरह 'अंधेरे बंद कमरे' तथा 'न आने वाला कल' आदि उपन्यासों में भी वही समस्या उभरी हुई दिखाई देती है। वे स्वयं कहते हैं-

मेरी रचनाएँ संबंधों की यंत्रणा की अकेलेपन में

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this

झेलते लोगों की है।"

यौन उन्मुक्तता :- इस विचारधारा की प्रबल हस्ताक्षरकर्त्री कृष्णा सोबती है। उनका मानना है कि किसी व्यक्ति की नैतिकता का मूल्यांकन उसकी यौन एकनिष्ठता के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। अपनी कहानी मित्रो मरजानी की भाँति ही उन्होंने उपन्यासों में भी नारी पर लादी गई यौन वर्जनाओं को तोड़ा।

(3) नारी विमर्श :- स्वतंत्रता के पश्चात् नारी अधिकारों की मांग ने नारी को सशक्त किया और लेखन के क्षेत्र में नारी के आगमन ने स्वयंवेदना को संवेदना से आगे स्थापित किया। • नारी विमर्श ने स्त्रियों पर हो रहे शोषण के मूल स्वरूप को उजागर करते हुये उपन्यास लेखन को नवीन विषय-वस्तु प्रदान की।

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'नया उपन्यास' केवल एक प्रवृत्ति नहीं होकर कई नवीन प्रवृत्तियों को अपने में समेटता है, जिसने उपन्यास लेखन

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को एक नवीन दिशा तथा गति प्रदान की, जो अपने पूर्व परम्पराओं से पूर्णतः भिन्न है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भीष्म साहनी के उपन्यासों के आधार पर उनकी सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिये। 15

भीष्म साहनी एक सामाजिक चेतना के उपन्यासकार है। उन्होंने प्रेमचन्द की सामाजिक यथार्थ की परम्परा को आगे बढ़ाते हुये उपन्यासों को नवीन आयामों से जोड़ा। उनकी सामाजिक चेतना निम्नलिखित बिन्दुओं में देखी जा सकती है -

'तमस' उपन्यास में उन्होंने अपनी सामाजिक सौहार्द की भावना का परिचय देते हुये हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष का कारण राजनीतिक कारणों को माना है न कि सामाजिक-सांस्कृतिक कारणों को।

'तमस' में ही वे आगे स्पष्ट करते है कि सभी धर्म एकता की सलाह देते है किन्तु सभी धार्मिक कट्टरपंथियों ने उसको विकृत बना दिया है।

'झरोखें' उपन्यास में उन्होंने समाज को खुली आँखो से देखने का प्रयास किया है। इसी युक्ति ने सामाजिक विद्रूपताओं को उजागर करते हुये धर्म को मानवीयता तथा तार्किक क्षमता के आधार पर परीक्षण करने का प्रयास किया है। उनका मानना है कि धर्म का एक चेहरा हमेशा इसे

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मानवता के लिए खड़े होने की प्रेरणा देता है।

'कड़ियाँ' उपन्यास में उन्होंने नारी शोषण को उजागर किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि किस प्रकार आर्थिक परतंत्रता नारी के शोषण का कारण बनती है।

इसके अतिरिक्त उन्होंने शहरी जीवन की जटिलताओं, पूँजीवाद द्वारा शोषण, ग्रामीण क्षेत्र में गरीबी आदि को भी अपनी लेखनी का हिस्सा बनाया। शहरी मजदूर किस तरह गाँव से आकर शहर में शोषित होता है, यह उन्होंने स्पष्ट किया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जिस प्रकार प्रेमचन्द ने ~~अपनी~~ अपने उपन्यासों में सामाजिक विद्रूपताओं को उजागर किया भीष्म साहनी ने उसी परम्परा को नई दिशा दी। साथ ही यशपाल के झूठा-सच की भाँति साम्प्रदायिकता के कारणों की खोज करते हुये उसके राजनीतिक तथा आर्थिक पहलू को स्पष्ट किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अतः कहा जा सकता है कि भीष्म साहनी सजग सामाजिक चेतना के उपन्यासकार है। उनके उपन्यासों में सामयिक बोध अपनी कालसीमा का अतिक्रमण करते हुये वर्तमान समय को स्पष्ट करने लगता है।

कृपया इस स्थ
कुछ न लिखें।
(Please don't
anything in th

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास का परिचय दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्द हिन्दी उपन्यास के केन्द्रीय व्यक्तित्व है। अतः उपन्यास विधा के कालखंड को उनके नामकरण के आधार पर विभक्त किया है। ~~चूंकि~~

चूंकि प्रेमचन्दपूर्व युग में यूरोपीय संस्कृति के प्रभाव में नवजागरण के तत्वों का प्रसार हो रहा था फलस्वरूप उपन्यास के रूप में नवीन विधा का विकास हुआ। चूंकि इस समय उपन्यास विधा जन्म ले रही थी अतः इसमें आदर्शवादी तत्वों का भी पर्याप्त समावेश है।

प्रेमचन्दपूर्व उपन्यास में श्रीनिवासदास, श्रद्धारामफिल्लौरी, गोपालराम गहमरी, देवकीनन्दन खत्री आदि प्रमुख उपन्यासकार है।

श्रद्धाराम फिल्लौरी - भाग्यवती
श्रीनिवास दास - परीक्षागुरु
देवकीनन्दन खत्री - चन्द्रकान्ता
गोपालराम - जासूस पर जासूसी

~~प्रेमचन्द~~ प्रेमचन्द-पूर्व उपन्यास लेखन में मुख्यतः तीन प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है -

दृष्टि
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(1) मनोरंजनपरक - इन उपन्यासों का मूल उद्देश्य तत्कालीन समाज को रोमांचक विषयवस्तु उपलब्ध कराना था। जैसे - ~~स्वच्छंदी लाल~~
परीक्षा गुरु, भाग्यवती आदि।

(2) ऐतिहासिक :- ऐतिहासिक उपन्यासों को लिखने का मूल उद्देश्य प्रसाद की भाँति देशभक्ति की भावना को बढ़ाना नहीं देकर केवल तथ्य तथा कहानी के रूप में उपलब्ध कराना था। जैसे - चन्द्रकांता

~~(4) जासूसी उपन्यास~~

(3)

(ख) 'झूठा-सच' में अभिव्यक्त देश-विभाजन की समस्या पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

झूठा-सच यशपाल का देशविभाजन तथा साम्प्रदायिकता की समस्या पर महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास के दो भाग है- वतन और देश तथा देश का भविष्य।

वतन और देश में यशपाल विभाजन के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों का वर्णन करते हुये लिखते है कि किस तरह सम्पूर्ण घटना घ-इ हुई। वही देश का भविष्य में वे राजनीतिकों तथा बौद्धिक व्यक्तियों द्वारा देश के भविष्य की चिंताओ तथा आशाओं को स्पष्ट करते हैं तो साथ ही सूद तथा सोमराज जैसे तत्वों के द्वारा पत्रकारिता तथा राजनीति की व्यावसायिकता को भी स्पष्ट करते है. जो मन्नू भंडारी के महाभोज तथा नागार्जुन की 'अंधेरे में' में साकार भी हो गया।

झूठा-सच का महत्त्व तत्कालीन राष्ट्रीय चेतना की वाहक घटनाओं के गुम्फन तथा संदर्भों के संबोधन में है।

मध्यकालीन जड़ता, शरणार्थियों की समस्या, विभाजन पर की जा रही राजनीति, शरणार्थियों

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का संदर्भ तथा की त्रिजीविषा, मध्यवर्ग की कुंठा, उच्च वर्ग का लालच तथा निम्न वर्ग की निराशा सबकुछ झूठा-सच में साकार हो गया है।

आगे यशपाल स्पष्ट करते हैं कि देश का विभाजन तत्कालीन क्रिटिश फूट डालो और राज करो की नीति के अतिरिक्त राजनीतिक हितों से भी प्रभावित था। इसी राजनीतिक लोलुपता को भीष्म साहनी ने 'तमस' में तथा कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' स्पष्ट किया है।

यशपाल ने विभाजन के आर्थिक पहलू की ओर ईशारा करते हुये कहा है कि विभाजन का शिकार केवल मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग हुआ।

इस प्रकार स्पष्ट है कि यशपाल का झूठा-सच केवल तत्कालीन परिस्थितियों में ही प्रासंगिक नहीं है बल्कि यह गीतांजलि श्री के 'हमारा शहर उस बरस' तथा काशीनाथ सिंह के 'आखिरी कलाम' में भी के रूप में पुनः उपस्थित होता है।

कृपया इस स्थ
कुछ न लिखें।
(Please don't
anything in th

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) स्त्री-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी उपन्यास पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्था कुछ न लिखें।
(Please don't anything in th

नारी-विमर्श नव उपन्यास लेखन दौर की एक विशेष प्रवृत्ति है, जिसका उद्देश्य नारी समस्याओं को साहित्य के स्तर पर उभारना था।

नारी लेखकों का मानना है कि ~~स्वयंवेदना~~ 'संवेदना' चाहे कितनी भी बड़ी हो 'स्वयंवेदना' से कम ही होती है। नारी विमर्श के संदर्भ में हिन्दी उपन्यास को दो भागो में बाँटा जा सकता है-

(अ) हिन्दी उपन्यास की सामान्य विकास परम्परा

(ब) नारी लेखकों द्वारा विकसित परम्परा

हिन्दी उपन्यास की सामान्य परम्परा मे प्रेमचन्द का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने 'गोदान' निर्मला आदि उपन्यासों के माध्यम से नारी समस्या को उठाया है।

प्रेमचन्द पश्चात युग में जैनेन्द्र ने मनोविश्लेषणवादी ~~नजरि~~ नजरिये से नारी के ~~आत्म~~ अंतर्संघर्ष को उठाया है वहीं प्रगतिवादियों ने शोषण को पहचान कर उसको लेखनी का हिस्सा बनाया है।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नारी लेखकों में कृष्णा सोबती सबसे सशक्त हस्ताक्षर है। उन्होंने 'सूरजमुखी अंधेरे के' 'मित्रो मरजानी' आदि उपन्यासों के माध्यम से नारी समस्याओं को उजागर किया है। वही मन्नू भंडारी ने 'आपका बंटी' के द्वारा नारी विमर्श के क्षेत्र में अपना योगदान दिया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि नारी विमर्श के अन्तर्गत महिला लेखकों ने आत्मघटित यथार्थ को प्रकट करते हुये इसे साहित्य का हिस्सा बनाया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)